संस्कार विवेचन

संस्कारपरक चौपाइयाँ

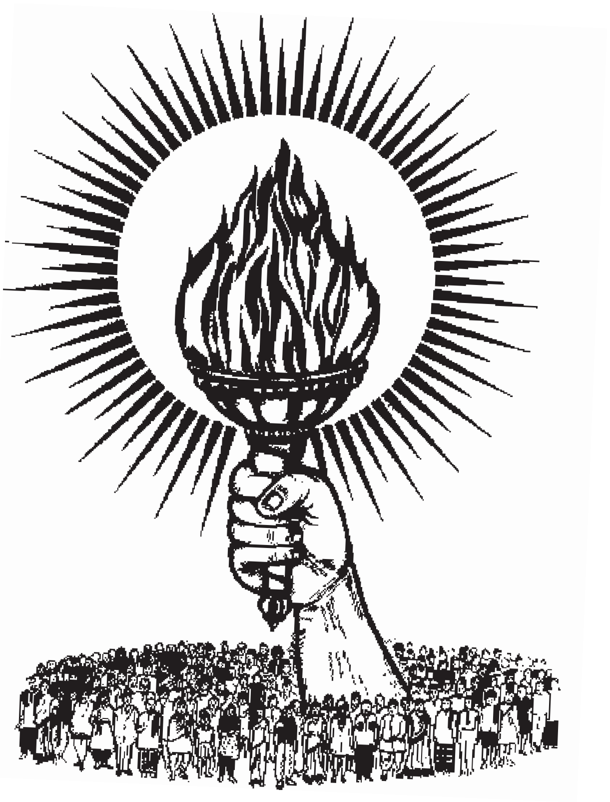

गायत्री तीर्थ शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
(उत्तराखण्ड) पिन-२४९४११

संस्कार परम्परा

अनगढ़ आता है इन्सान, संस्कार करते निर्माण।
संस्कार हीन संतान, धरती पर है भार समान॥
संस्कार देवत्व जगाते, संस्कार ही 'देव' बनाते।
व्यक्ति समाज वहाँ सुधरा है, जहाँ संस्कार परम्परा है॥

१. संस्कार परम्परा हमारी महानतम आध्यात्मिक विरासत, ऋषियों की जीवन-साधना का निचोड़।

२. मनुष्य की जीवन-यात्रा में महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं (चौराहों) पर प्रदान किया जाने वाला मार्गदर्शन।

३. ऋषि-प्रणीत यज्ञीय-शैली का प्रशिक्षण एवं अभ्यास।

४. मनुष्य को पशु-प्रवृत्तियों की ओर बढ़ने से रोककर उसे महानता की ओर प्रेरित करने का एक आध्यात्मिक प्रयोग।

५. यज्ञाग्नि की साक्षी में वेदमंत्रों के प्रयोग द्वारा वातावरण में दिव्यता का संचार करके व्यक्ति के अंतःकरण को प्रभावित करने का विज्ञान-सम्मत प्रयोग।

६. मानसिक चिकित्सा की प्रखर पद्धति। मनुष्य मात्र को जीवन जीने की कला सिखाने वाला एक अद्‌भुत प्रयोग।

७. स्वस्थ शरीर, स्वच्छ मन एवं सभ्य समाज के निर्माण का मूल मंत्र।

८. विकासग्रस्त जीवन का परिष्कार करके उसे सजाने-सँवारने का विवेक-सम्मत प्रयोग।

९. प्रज्ञा अभियान शान्तिकुञ्ज द्वारा वर्तमान विनाशकारी परिस्थितियों में सृजन के समर्थक, परिष्कृत व्यक्तित्व के धनी लोकसेवियों का उत्पादन।

संस्कार क्या है?

संस्करणं सम्य्क करणं वा संस्कारः।

संस्कार परम्परा हमारी महान आध्यात्मिक विरासत है। इसे जीवन की कला का प्रशिक्षण कहा जा सकता है। हमारे पूर्वज ऋषियों ने जीवन-विद्या पर गहन शोध करके यह तथ्य उजागर किया कि मानव जीवात्मा की विराट यात्रा का एक पड़ाव मात्र है। इसमें अनेक महत्वपूर्ण मोड़ या चौराहे हैं, जिन पर मार्गदर्शन के अभाव में भटकाव की पूरी-पूरी सम्भावना रहती है। ऐसे प्रत्येक मोड़ पर संस्कार के रूप में एक मार्गदर्शन का सूचना पट लगाकर ऋषियों ने सुसंस्कृत समाज की संरचना का सफल प्रयोग किया था।

संस्कारों की संख्या व नाम के सम्बन्ध में आचार्यों में पर्याप्त मतभेद है। गौतम ऋषि ने इनकी संख्या ४० तथा ऋषि अंगिरा ने २५ लिखी है। व्यास, मनु आदि अधिकांश मनीषियों ने १६ की संख्या स्वीकार की है। षोडश संस्कार की मान्यता उसी का परिणाम है। कुछ आचार्यों ने १२ एवं १० की संख्या भी मानी है। वर्तमान समय में लोगों की मनःस्थिति एवं परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए परम पूज्य गुरुदेव पं.श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने निम्नलिखित १२ संस्कारों को व्यापक अभियान के रूप में सम्पन्न कराये जाने की बात पर जोर दिया। शेष संस्कारों के महत्त्वपूर्ण कर्मकाण्डों एवं प्रेरणाओं को इन्हीं के साथ जोड़ दिया है। ये हैं- पुंसवन, नामकरण, अन्नप्राशन, चूड़ाकरण (मुण्डन), उपनयन (यज्ञोपवीत), विवाह, वानप्रस्थ, अन्त्येष्टि, मरणोत्तर, जन्मदिवस एवं विवाह-दिवस संस्कार।

यज्ञीय वातावरण में किया गया मार्गदर्शन व्यक्ति की अंतःचेतना को प्रभावित करता है। इस प्रकार व्यक्ति एवं परिवार के प्रशिक्षण का आध्यात्मिक प्रयोग पूर्ण होता है। जिस प्रकार खदान से निकली हुई अनगढ़ व सामान्य ताँबा, लोहा जैसी धातुओं को

बड़े कारखाने (स्टील प्लाण्ट) में संस्कारित करके सुघड़ व उपयोगी बनाया जाता है, जिस प्रकार लोहा जैसा जैसी सामान्य धातु के टुकड़े को आयुर्वेद के आचार्यों द्वारा गजपुट, ताप, खरल आदि क्रियाओं द्वारा लौह भस्म के रूप में उपयोगी रस-रसायन बना दिया जाता है। उसी प्रकार हमारे ऋषियों ने संस्करण प्रक्रिया के माध्यम से मनुष्य के आत्मिक व भौतिक विकास का मार्ग प्रशस्त करके मानव को महामानव, देवमानव स्तर तक विकसित किया था। इस प्रकार पृथ्वी पर स्वर्ग की संकल्पना को साकार किया था, वर्तमान समय में पुनः वही होने जा रहा है। **संस्कारो हि नाम गुणाधानेन वा दोषपनयनेन वा।** (सा.वा.) संस्कार परम्परा अर्थात् सत्प्रवृत्ति सम्वर्धन-दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन।

पुंसवन संस्कार

गर्भवती का शुद्ध आचार, यह ही है पुंसवन संस्कार।
माता का जैसा हो ध्यान, पैदा हो वैसी संतान॥
संस्कार जो गर्भ में पाता, बालक वे ही लेकर आता।
गर्भस्थ बालक का परिष्कार, करता है पुंसवन संस्कार॥

श्रृंगि रिषिहि वशिष्ठ बोलावा। पुत्रकाम शुभ जग्य करावा॥
भगति सहित मुनि आहुति दीन्हें। प्रगटे अगिनि चरूकर लीन्हें॥
यह हवि बाँटि देव नृप जाई। जथा जोग जेहि भाग बनाई॥

पुमान सूयते इति पुंसवनम्॥

पुरुषार्थी संतान की कामना से किया जाने वाल पुंसवन संस्कार (जन्म से पूर्व) प्राग्जन्म संस्कारों (गर्भाधान, सीमान्तोन्नयन) में प्रमुख है। वर्तमान समय की मनःस्थिति एवं परिस्थितियों को देखते हुए पूज्य गुरुदेव ने तीनों संस्कारों की महत्त्वपूर्ण प्रेरणाओं एवं कर्मकाण्डों को पुंसवन संस्कार के साथ जोड़ दिया है।

गर्भस्थ शिशु न केवल माँ के आहार से अपना आहार ग्रहण करता है, बल्कि विचारों एवं भावनाओं को भी माँ के माध्यम से ही प्राप्त करता है। इसीलिए गर्भवती माँ के आहार-विहार तथा आचार-विचार का ही नहीं, अपितु उसके प्रति परिवार जनों के व्यवहार का भी समुचित मार्गदर्शन इस संस्कार के साथ प्रदान किया जाता है। माँ अपने संकल्प के अनुरूप ही बच्चे का निर्माण करती है। पुंसवन संस्कार के माध्यम से इस सामर्थ्य का बोध कराते हुए समाज में नारी को सम्मानजनक रूप को प्रतिष्ठित किया जा रहा है। इस प्रकार **'यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमन्ते यत्र देवताः'** की उक्ति पुनः सार्थक सिद्ध होने जा रही है।

गर्भ-निहित शिशु चेतना, करने को संस्कार,
अभिमंत्रित चरु पुंसवन है औषधि उपचार।
शिशु संस्कारित गर्भ में बढ़ता है अविराम,
संस्कारित करना उसे, है घर-भर का काम।

नामकरण संस्कार

नाम रखो! कर सोच विचार, यही है नाम करण संस्कार।
बालक का ऐसा हो नाम, सुनकर भाव जगे अभिराम॥

चौ.- नामकरण कर अवसरु जानि। भूप बोलि पठए मुनि जानी॥
करि पूजा भूपति अस भाषा। धरिअ नाम जो मुनि गुनि राखा॥
सो सुख धाम राम अस नामा। अखिल लोक दायक बिश्रामा॥
विश्व भरन पोषन कर जोई। ताकर नाम भरत अस होई॥
जाके सुमिरन ते रिपु नासा। नाम शत्रुहन बेद प्रकाशा॥

दोहा- लच्छन धाम राम प्रिय सकल जगत आधार॥
गुरु बशिष्ठ तेहि राखा लछिमन नाम उदार॥

''पिता मामा च दधतुर्यदग्रे'' सर्वप्रथम माता-पिता द्वारा प्रदान

किया गया सम्बोधन-नामकरण।

जन्म के बाद सम्पन्न होने वाले क्रमशः तीन संस्कारों - जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण के महत्त्वपूर्ण कर्मकाण्डों एवं उनकी प्रेरणाओं का समावेश। शिशु के अंदर मौलिक कल्याणकारी प्रवृत्तियों एवं आकांक्षाओं की स्थापना। कुसंस्कारों के निवारण तथा सुसंस्कारों के विकास की पृष्ठभूमि का निर्माण। अभिभावकों द्वारा शिशु को जन्म देने के साथ उन्हें व्यक्तित्व सम्पन्न बनाने का कर्त्तव्यबोध। **यथा नामे तथा गुणे।** शिशु में नाम के अनुरूप गुणों का विकास की मनौविज्ञानिक प्रक्रिया का शुभारम्भ। दिव्य द्रष्टा कुलगुरु व पुरोहित द्वारा शिशु के भविष्य को देखकर भावी गुणों के अनुसार नाम निर्धारण की प्राचीन परम्परा जैसे वशिष्ठ द्वारा राम, भरत, लक्ष्मण आदि का नामकरण। गुण कर्म स्वभाव के नाम परिवर्तन का निर्धारण की सहज सामाजिक परम्परा जैसे सुयोधन का दुर्योधन, रावण अर्थात्-**रावयति भीषयति सर्वान्-इति। चतुर्विधान नामानि धार्याणि।** चार प्रकार के नामों का विधान-देवता के नाम, मासनाम, नक्षत्रनाम, व्यवहार नाम।

नामकरण संस्कार से है शिशु की पहचान।
नाम प्रेरणाा दे सके, इसका रखिये ध्यान॥
रहा अजामिल पापमय नारायण था पुत्र।
नाम पुकारा पुत्र का पिता हो गया मुक्त॥

अन्नप्राशन संस्कार

अन्नप्राशन में खीर चटाते, सात्विक भोजन करो सिखाते।
जैसा हम करते हैं भोजन, वैसा ही हो जाता चिंतन॥

षण्मासं चैनमन्नं प्राशयेल्लघुहितं च। -सुश्रुत

छठे महीने से शिशु को हितकारी और सुपाच्य अन्न देने का विधान। लगभग इसी समय दाँतों का निकलना। ठोस आहार की आवश्यकता का संकेत। **तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः।** जीवन में यज्ञीय

अन्न (आहार) ही ग्रहण करने का शास्त्रों में निर्देश। शुभारम्भ यज्ञीय वातावरण में अन्नप्राशन संस्कार से। जैसा खाये अन्न वैसा बने मन। आहार से स्थूल शरीर को आवश्यक ऊर्जा के साथ ही मन मन को विचार भी मिलते हैं। अतः वह पौष्टिक व सुपाच्य होने के साथ-साथ ईमानदारी से परिश्रमपूर्वक अर्जित किया हुआ व सुसंस्कारी भी हो। आहार रसोई बनाने वाले के विचारों एवं भावों से भी प्रभावित होता है, अतः यज्ञीय भाव से भगवान् के लिए नैवेद्य रूप में ही उसका निर्माण हो। मन अर्थात् विचारों से ही जीवन की गतिविधियों का निर्धारण। अन्नप्राशन संस्कार से जीवन निर्माण की दिशा में परिवार के सदस्यों का मार्मिक प्रशिक्षण।

जैसा खाते अन्न हैं, वैसा बनता मन।
सात्विक, पौष्टिक खीर से, होये अन्न अशन॥
अन्न-प्राशन संस्कार यह, देता है निर्देश।
अपने श्रम का खाइये अन्न यही संदेश॥

मुण्डन (चूड़ाकर्म) संस्कार

मुण्डन गर्भ-विकार निकाले, सद्चिंतन की शक्ति उभारे।
परिष्कार शिशु के चिंतन का, है उद्देश्य यही मुण्डन का॥

चौ.- कछुक काल बीतें सब भाई। बड़े भये परिजन सुखदाई॥
चूड़ाकरन कीन्ह गुरु जाई। बिप्रन्ह पुनि दछिना बहु पाई॥
चूड़ाकर्म द्विजातीनां सर्वेषामेव धर्मतः॥

मुण्डन सभी द्विजातियों के लिए आवश्यक धर्म कृत्य। गर्भ से आने वाले बालों को प्रथम बार यज्ञीय वातावरण में साफ करने की क्रिया। जीवात्मा के साथ जन्म-जन्मान्तरों से चली आने वाली हीन-पशु प्रवृत्तियों का निवारण। मानवीय गौरव-गरिमा के अनुरूप देव वृत्तियों के बीजारोपण। प्रतीक शिखा की स्थापना। इस कार्य में

दिव्य चेतन धाराओं का भी सहयोग मिले। अतः देवस्थलों पर ही यह संस्कार कराने की परम्परा। बालक के मस्तिष्कीय (बौद्धिक) विकास एवं सुरक्षा के सम्बन्ध में अभिभावकों का मार्गदर्शन एवं प्रशिक्षण। गो-रस कर्मकाण्ड के अंतर्गत दुग्ध-दधि से मस्तक लेपन अर्थात्- अवाँछनीयताओं के निवारण में स्नेह। त्रिशिखा बंधन अर्थात् मस्तिष्क की सृजन, पोषण, परिवर्तन रूपी तीनों शक्ति धाराओं की आवश्यकता का नियंत्रण। उपनयन, संन्यास, मरणोत्तर आदि संस्कारों, तीर्थयात्रा एवं अन्य अवसरों पर कराये जाने वाले मुण्डन का तात्पर्य-जीवन क्रम के प्रचलित ढर्रे को बदल डालने का वैज्ञानिक एवं मनौविज्ञानिक प्रयोग।

बालक के मस्तिष्क का हो बहुमुखी विकास।
है मुण्डन संस्कार के द्वारा ही यही प्रयास॥
उन्मूलन दुष्वृत्ति का है मुण्डन की सिद्धि।
और शिखा-स्थापना सत्वृत्ति और समृद्धि॥

विद्यारम्भ संस्कार

विद्यारम्भ संस्कार कराओ, विद्या की महिमा समझाओ।
शिक्षा केवल ज्ञान बढ़ाती, विद्या जीवन-कला सिखाती॥

चौ.- गुरु गृहँ गये पढ़न रघुराई। अल्प काल विद्या सब आई।

बालकों में शिष्टाचार-

चौ.- प्रातकाल उठ के रघुनाथा। मातु पिता गुरु नावहि माथा॥
अस कहि रथ रघुनाथ चलावा। विप्र चरण पंकज सिरनावा॥
सीय राम मय सब जगजानी। करउ प्रणाम जोरि जुगपानी॥
प्राप्तेऽथ पंचमे वर्षे विद्यारम्भ तु कारयेत्।

बालक का विद्यारम्भ संस्कार पाँचवें वर्ष। अक्षर से अक्षर

ब्रह्म की ओर जीवन यात्रा का शुभारम्भ।

दिव्य बौद्धिक क्षमताओं के जागरण एवं विकास का क्रम प्रारम्भ। शिक्षा-सांसारिक जानकारी का जीवन निर्मात्री (अध्यात्म) विद्या के रूप में विकास हो, इस हेतु भावनात्मक पृष्ठभूमि का निर्माण। विद्या ही जीवन के चार पुरुषार्थों (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) की सिद्धि का मूल आधार। **विद्ययाऽमृतश्रुते।** विद्या ही अमरता का साधन व मुक्ति का द्वार। गणेश एवं सरस्वती का पूजन अर्थात् विवेक बुद्धि के साथ कला-सम्वेदना के विकास की आवश्यकता। उपकरण (लेखनी, दवात और पुस्तिका) पूजन का अर्थ-इनकी अधिष्ठात्री शक्तियों (धृति, पुष्टि और तुष्टि) के रूप में अभिरुचि, एकाग्रता एवं श्रमशीलता जैसे गुणों का आवाहन-स्थापना। गुरु-शिष्य के मध्य श्रद्धा एवं वात्सल्य जैसे दिव्य भावों के विकास की कामना से गुरु पूजन। जीवन विकास के क्रम में बालक के प्रति माता-पिता के उत्तरदायित्वों का शिक्षण।

माता शत्रुः पिता वैरी, येन बालो न पाठिताः।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा॥

केवल शिक्षा ही नहीं, विद्या है अनिवार्य।
शिक्षा से विद्या बिना सधते कब सत्कार्य॥
विद्यारम्भ संस्कार से जमें ज्ञान के बीज।
सद्गुरु से दीक्षा मिले, श्रेष्ठ बने जा चीज॥

यज्ञोपवीत संस्कार

चौ.- गुरु गृहँ गये पढ़न रघुराई। अल्प काल विद्या सब आई।

बालकों में शिष्टाचार-

चौ.- प्रातकाल उठ के रघुनाथा। मातु पिता गुरु नावहि माथा॥
अस कहि रथ रघुनाथ चलावा। विप्र चरण पंकज सिरनावा॥

सीय राम मय सब जग जानी। करउ प्रणाम जोरि जुगपानी॥

मातुरग्रेऽधिजननंद्वितीयं मोञ्जिबंधनम्।

एक जन्म माता के गर्भ से और दूसरा जन्म यज्ञोपवीत धारण से। **संस्काराद् द्विज उच्यते।** यज्ञोपवीत-द्विजत्व का प्रतीक। उपनयन, व्रतबंधन, मौञ्जी बंधन आदि रूपों में प्रचलित संस्कार-यज्ञोपवीत। सांस्कृतिक मूल्यों के आधार पर जीवन में आमूलचूल परिवर्तन के संकल्प का प्रतीक। मानवीय गरिमा के अनुरूप आदर्शवादी परमार्थ परायण जीवन जीने का संकल्प समारोह। यज्ञोपवीत एक सूत्र। सूत्र अर्थात् सूत का बना नौ धागों का एक प्रतीक। यज्ञ अथवा गायत्री की मूर्तिमान प्रतिमा। सूत्र अर्थात्-फार्मूला-नौ गुणों से समन्वित जीवन जीने का ऋषि प्रणीत फार्मूला। ये गुण हैं- १. समझदारी, २. ईमानदारी, ३. जिम्मेदारी, ४. बहादुरी, ५. श्रमशीलता, ६. शालीनता-शिष्टता, ७. मितव्ययिता, ८. सुव्यवस्था, ९. उदार सहकारिता। व्रतशील ब्रह्मनिष्ठ जीवन जीने वाले लोकसेवियों के प्रभाव से ही भारत भूमि को **'स्वर्गादपि गरीयसी'** देवभूमि तथा भारतीय संस्कृति को विश्व संस्कृति-देवसंस्कृति का गौरव प्राप्त। देवसंस्कृति दिग्विजय अभियान अर्थात् गौरवशाली अतीत की पुनरावृत्ति।

यज्ञोपवीत संस्कार है दायित्वों का ज्ञान।
ब्रह्मा विष्णु महेशवत् जन-जन का कल्याण॥
सविता की तेजस्विता, सद्गुरु की तप-सिद्धि।
पाकर हम करते रहें, श्रेष्ठ गुणों में वृद्धि॥

दीक्षा संस्कार

सद्गुरु से दीक्षा यदि पाओ, जीवन सुधरे, भव तर जाओ।
गुरु का रंग तभी चढ़ता है, शिष्य 'समर्पण' जब करता है॥

चौ.- भए कुमार जबहिं सब भ्राता। दीन्ह जनेऊ गुरु पितु माता।
देव एक गुन धनुष हमारे, नवगुन परम पुनीत तुम्हारे॥

दीयते ज्ञानमत्यन्तं, क्षीयते पापसञ्चयः।
तस्मात् दीक्षेति सा प्रोक्ता, मुनिभिस्तत्त्व दर्शिभिः॥

संचित पापों का नाश करके ज्ञान का अनुदान प्रदान करने वाली प्रक्रिया का नाम दीक्षा है। जीवन विद्या के क्षेत्रों में दक्षता प्राप्त करने के उद्देश्य से मार्गदर्शक की नियुक्ति दीक्षा संस्कार। मात्र सामान्य कर्मकाण्ड नहीं, एक सूत्र आध्यात्मिक प्रयोग। गुरु के प्राण, तप, पुण्य एवं ज्ञान के अंश की शिष्य के जीवन में स्थापना। गुरु रूपी समर्थ सत्ता के प्रति शिष्य का सर्वतोभावेन समर्पण। शिष्य रूपी सामान्य पौधे के साथ गुरु रूपी विशेष पौधे की कलम बाँधना। गुरु से प्राप्त अनुदानों को धारण करने एवं पचाने की क्षमता अर्थात् पात्रता। पात्रता के विकास हेतु गुरु दक्षिणा का विधान। दक्षिणा का निर्धारण गुरु शिष्य की योग्यता एवं दक्षता के अनुरूप। परम पूज्य गुरुदेव व माता जी द्वारा निर्धारित गुरु दक्षिणा के पाँच अनुशासन- १. गायत्री महामंत्र की नियमित उपासना, २. पूज्य गुरुदेव द्वारा लिखित युग साहित्य व अखण्ड ज्योति या अन्य सहयोगी पत्रिकाओं का नित्य स्वाध्याय, ३. जीवन के दोष दुर्गुणों का क्रमशः संकल्प पूर्वक छोड़ने का प्रयास, ४. सत्प्रवृत्ति संवर्धन-दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन के निमित्त समयदान, ५. इस अभियान को गति देने के लिए अपने साधनों का नियोजन-अंशदान।

गुरु के सत्संकल्प की पूर्ति हेतु शिष्य का पुरुषार्थ नियोजित हो तभी दीक्षा की सार्थकता।

दीक्षा लेता शिष्य जब गुरु देता अनुदान।
संचित पाप विनष्ट कर भर देता निज ज्ञान॥
अपने तप के अंश से गुरु सींचे निज शिष्य।
प्राण पिलाकर मातृवत् निर्मित करे भविष्य॥

नवधा भक्ति चौपाई

नवधा भगित कहऊ तोहि पाहीं। सावधान सुनु धरु मन माहीं॥
प्रथम भगति संतन्ह की सगा। दूसरि गति मम कथा प्रसंगा॥

दोहा- गुरुपद पंकज सेवा, तीसरी भगति अमान॥
चौथ भगति मम गुन गज, करई कपट तज गान॥

मंत्र जाप मम दृढ़ बिश्वासा। पंचम भजन सो बेद प्रकाशा॥
छठ दम सील विरति बहु करमा। निरत निरंतर सज्ञन धरमा॥
साँतवा सम मोहि मय जग देखा। मोते संत अधिक करि लेखा॥
आठवँ जथा लाभ सन्तोषा। सपनेहुँ नहिं देखइ पर दोषा॥
नवम सरल सब सन छल हीना। मम भरोस हिय हरष न दीना॥
नव महुँ एकउ जिन्ह के होई। नारि पुरुष सचराचर कोई॥
सोइ अतिसय प्रिय भामिनि मोरें। सकल प्रकार भगति दृढ़ तोरे॥
जोगि बृंद दुरलभ गति जोई। तो कहुँ आजु सुलभ भई सोई॥

विवाह संस्कार

तब विवाह का करो विचार, तन, मन, धन से हो तैयार।
विवाह दो आत्माओं का मेल, नहीं गुड्डा-गुड़ियों का खेल॥
खर्चीली शादी बरबादी, गरीब, बेईमान बनाती।
बिन दहेज के ब्याह रचाओ, इस राक्षस को मार भगाओ॥

छन्द- बर कुँअरि करतल जोरि साखो चारु दोऊ कुल गुरु करै।
भयो पानि गहनु बिलोकि बिधि सुर मनुज मुनि आनँद भरैं॥
सुख मूल इलहि देखि दम्पति लुलक तन हुलस्यो हियो।
करि लोक बेद बिधानु कन्यादानु नृप भूषन कियो॥

भाँवर एवं सिन्दूर दान

चौ.- प्रमुदित मुनिन्ह भाँवरी फेरी। नेग सहित सब रीति निबेरी।
राम सीय सिर सेन्दूर देहीं। शोभा कहिन जाति बिधि केही॥
बहुरि बशिष्ठ दीन्हि अनुशासन। बरु दुलहिनि बैठे एक आसन॥

पाणि ग्रहण

चौ.- पाणि ग्रहण जब कीन्ह महेषा। हियँ हरसे तब सकल सुरेशा॥
बेदमंत्र मुनिबर उच्चरहीं। जय-जय-जय शंकर सुर करहि॥
बरु बिलोकि दंपति अनुरागे। पाय पुनीत पखारन लागे॥
करेहु सदा शंकर पद पूजा। नारि धरमु पति देउ न दूजा॥
सास ससुर गुरु सेवा करेहू। पति रुख लखि आयुस अनुसरेहू॥
अति सनेह बस सखि सयानी। नारि धरम सिखवहि मृदुबानी॥

विशिष्ट वहनं इति विवाहः- विशिष्टता विशिष्ट उत्तरदायित्वों को धारण करने का नाम विवाह संस्कार। नर-नारी द्वारा एक-दूसरे के प्रति अपनी विशिष्टताओं का समर्पण। दो आत्माओं का पवित्र मिलन। एक सम्मिलित नवीन इकाई का निर्माण। एक नये परिवार, नये समाज, नये राष्ट्र का निर्माण। परिवार एक छोटा राष्ट्र, राष्ट्र एक बड़ा परिवार। आदर्श समाज की स्थापना का मूल आधार।

विवाह मात्र एक सामाजिक समझौता नहीं, अपितु जन्म-जन्मात्तरों तक साथ निभाने का शपथ समारोह। शक्तियों, यज्ञाग्नि, सम्बंधियों, इष्ट मित्रों की साक्षी में सात परिक्रमाओं, सात कदमों के माध्यम से लिए संकल्प ही गृहस्थ जीवन का आधार।

चतुर्णामाश्रमाणाञ्च गृहस्थ विशिष्यते- चारों ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं सन्यास आश्रमों में गृहस्थ आश्रम ही सर्वश्रेष्ठ। गृहस्थ ही यज्ञ और तप का आधार। विवाह शारीरिक सौंदर्य और धन की अपेक्षा गुण, कर्म और स्वभाव की उत्कृष्टता अधिक महत्त्वपूर्ण। अहंकार पूर्ण धन का प्रदर्शन, धूम-धाम से भरपूर समारोह नहीं,

अपितु यज्ञीय वातावरण में सम्पन्न संस्कार ही सराहनीय। वर सत्कार अर्थात् श्रेष्ठता ही सम्मानीय। वर माला का अर्थ जीवन साथी के वरण, चुनाव की स्वीकृति। कन्यादान अर्थात कन्या के प्रति उत्तरदायत्विों का हस्तान्तरण। यज्ञाग्नि की परिक्रमा अर्थात् यज्ञीय अनुशासन में ही भावी जीवन की गतिविधियों का निर्धारण। गृहस्थ एक तपोवन है, जिसमें संयम, सेवा और सहिष्णुता की साधना करनी पड़ती है। - पूज्य गुरुदेव

दो आत्मा की एकता है विवाह संस्कार।
धन्धा नहीं दहेज का, जीवन भर सहकार॥
सद्‌गृहस्थ के नियम का करें सदा सम्मान।
और राष्ट्र को दे सकें, श्रेष्ठ-गुणी संतान॥

वानप्रस्थ संस्कार

सन्त कहहिं असि नीति दसानन। चौथे पन जाइहि नृप कानन॥
बर बस सज सुतहि नृप दीन्हा। नारि समेत गवन वन कीन्हा॥
वाने वनसमूहे प्रतिष्ठिते इति वानप्रस्थः।

गृहस्थ जीवन के दायित्व पूर्ण करके वन की ओर प्रस्थान। सामाजिक उत्तरदायित्वों के निर्वाह का संकल्प। समाज ऋण से मुक्ति का प्रयास। मोह-ममता को परिवार की ओर से शिथिल कर समाज की ओर उसका विकास। युवावस्था के कुसंस्कारों का शमन-प्रायश्चित। भारतीय धर्म-संस्कृति का प्राण। जनमानस का परिष्कार कर लोक कल्याणकारी प्रवृत्तियों के संचालन का दायित्व वहन। विश्व मानवता के कल्याण की योजनाओं निर्धारण एवं संचालन। इसी आधार पर भारत को देवभूमि व विश्वगुरु का सम्मान तथा भारतीय को विश्व संस्कृति की मान्यता। वानप्रस्थ परम्परा का

नवीन संस्करण, देवसंस्कृति दिग्विजय अभियान के सृजन सेनानी।

सद्‌गृहस्थ व्रत पूर्ण कर, पारिवारिक दायित्व।
वानप्रस्थ संस्कार का, भूलें नहीं महत्त्व॥
ज्येष्ठ पुत्र को सौंपकर अपने सारे भार।
जनसेवी जीवन जियें, ब्राह्मण सा आचार॥

जन्मदिवसोत्सव

'जन्म दिवस' हर साल मनाओ, क्या-क्या किया हिसाब लगाओ।
जन्म दिवस पर दुर्गुण छोड़ो, साथ ही एक सद्‌गुण जोड़ो॥

- जीवन लक्ष्य के चिंतन-मनन का शुभ दिन।
- आत्म निर्माण (आत्म निरीक्षण, आत्म समीक्षा, आत्म निर्माण, आत्म विकास) की दिशा में संकल्पित होने का पर्व।
- सावधान जीवन का नन्हा क्षण भी निरर्थक न बीत जाए- बड़े भाग मानुष तन पावा।

जन्मोत्सव करता सदा जीवन का संस्कार।
जैसे दीपावली पर, हानि-लाभ का सार॥
जन्मोत्सव पर त्यागते गत जीवन की भूल।
अगले जीवन के लिए व्रत लेते अनुकूल॥

विवाह दिवोत्सव

विवाह की वर्षगाँठ मनाओ, पति-पत्नी में प्रेम बढ़ाओ।
पति-पत्नी में हो सहकार, करो मित्र जैसा व्यवहार॥

अंत्येष्ठि संस्कार

अन्त्य+इष्टि=अन्त्येष्टि। यज्ञीय प्रक्रिया से प्राप्त जीवन का , शरीर का यज्ञीय प्रक्रिया में विसर्जन। जीवन की पूर्णता यज्ञ से ही सम्भव। प्रकृति द्वारा, पंचतत्त्व द्वारा शरीर को पंचतत्त्व में विलय। खाली हाथ आना, खाली हाथ जाना। मनुष्य के साथ उसका सत्कर्म-पुण्यकर्म ही जाता है। युग-युग तक जग याद करे, तुम ऐसा कर्म करो, कर्म में ऐसे मर्म भरो। जीवन की अगली यात्रा के लिए शक्ति और प्रेरणा प्रदान करना।

पंचभूत से प्राण का निष्कासन है मृत्यु।
यह परिवर्तन की तरह है साधारण कृत्य॥
मुट्ठी भर ही भस्म है, इस तन का परिणाम।
श्रेष्ठ योनि देते हमें किये गये शुभ काम॥

मरणोत्तर संस्कार

'मृतक भोज' से कोई न तरता, 'कर्मफल' भोगना पड़ता।
मृतक भोज का खर्च बचाओ, जन सेवा में उसे लगाओ॥
`'ब्रह्मभोज' का लाभ उठाओ, सद्विचार घर-घर पहुँचाओ।
भोजन कराना 'श्राद्ध' नहीं है, श्रद्धा यही है॥

1. बालि की मृत्यु पर श्री राम जी ने सुग्रीव से सारे कृत्य करवाये-
चौ.- तब सुग्रीवहिं आयुस दीन्ह। मृतक कर्म बिधिवत सब कीन्हा॥
2. श्री दशरथ जी के देहावसन पर भरत जी द्वारा-
चौ.- एहि बिधि दाह क्रिया सब कीन्हीं। बिधिवत न्हाई तिलाञ्जुलि दीन्हीं॥
3.चित्रकूट में श्रीराम जी द्वारा पिताजी का श्राद्ध कर्म-
चौ.- करि पितु क्रिया बेद जसि बरनी। भे पुनीत पातक तम तरनी॥
4. श्रीराम चन्द्रजी द्वारा भक्त जटायु गिद्धराज की अन्त्येष्टि-
दोहा :- अबिरल भगति माँग बर, गीध गयो हरि धाम।
तेहि की क्रिया जथोचित, निज कर कीन्ही राम॥

5. रावण के मृत्यु पर श्रीराम आज्ञा से विभीषण द्वारा-
चौ.- कीन्ही क्रिया प्रभु आयुस मानी। बिधिवत देशकाल जियँ जानी॥
पित हित भरत कीन्हि जसि करनी। सो मुख लाख जाइ नहिं बरनी॥

मृत्यु के बाद भी जीवन का, जीवात्मा का अस्तित्व। मृतात्मा की शांति, सद्गति, तृप्ति, तुष्टि के लिए तर्पण। **श्रद्धा दीयते श्राद्धः। तृप्तते अनेन इति तर्पण।** पितरों के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करना। उनके कार्यों को आगे बढ़ाना। लोकहितकारी कार्योंसे उन्हें प्रसन्न करना।

नहीं कर्मफल से बचा राव-रंक विद्वान।
श्रद्धा सेवा बड़ों की श्राद्ध सुकर्म महान॥
छोड़ी सम्पति आ सके यदि समाज के काम।
यह ही सच्चा श्राद्ध है अमर रहेगा नाम॥

सूक्तियाँ

१. ऋतस्य नामावभि सं पुनाति
सत्यभाषण के द्वार मनुष्य अपने आपको पवित्र करता है।
२. अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः।
यह यज्ञ संसार का केन्द्र है।
३. वेदोऽबिलो धर्ममूलम।
वेद समस्त धर्मों के मूल हैं। (स्रोत-आधार)
४. एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति।
सत तत्त्व (परमात्मा) एक ही है, ज्ञानीजन उसे अनेक नामों से पुकारते हैं।
५. उत्क्राम महते सौभाग्य।
महान सौभाग्य के लिए उठो प्रयत्न करो।
६. कृतं में दक्षिणे हस्त जयो में सव्य आहितः।
हमारे दाहिने हाथ में कृत (कर्म) एवं बायें हाथ में विजय है।
७. सत हस्त समाहर सहस्र हस्त संकिट।

हे मनुष्यों! आप सैकड़ों हाथों वाले होकर धन एकत्रित करें तथा हजारों हाथों वाले होकर उसका दान करें।

८. अपज्ञियों हलवर्चा भवति।

यज्ञ न करने वाला तेजोरहित होता है।

९. मित्रस्य चक्षुषा समीक्षा भटे।

हम परस्पर मित्र की दृष्टि से देखें।

१०. आब्रह्माण ब्रह्मामणों ब्रह्मवर्चसी जायताम्।

हे परमात्मा! ब्राह्मण ब्रह्मवर्चसी सम्पन्न हों।

११. येच देवा अयनन्ताथी येच पुरादिदः।

जो देवों के लिए यज्ञ करते हैं और दान देते हैं, वे श्रेष्ठ हैं।

अभिषेक-आशीर्वाद

नीचे अभिषेक और आशीर्वाद के मंत्र दिऐ जा रहे हैं। कर्मकाण्ड में जहाँ, कहीं इन क्रियाओं की आवश्यकता पड़े, वहाँ इनमें से कुछ मंत्रों का उपयोग सुविधानुसार किया जा सकता है।

गणाधिपो भानुशशी धरासुतो, बुधो गुरुर्भार्गसूर्यनंदनौ।
राहुश्श्र परं नवग्रहाः, कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा॥ १॥

उपेन्द्र इन्द्रो वरुणो हुताशनो, धर्मो यमो वायुहरी चतुर्भजः।
गंधर्वयक्षोरगसिद्धचारणाः, कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा॥ २॥

मनुर्मरीचिर्भृगुदक्षनारदाः, पाराशरो व्यासवसिष्ठभार्गवाः।
वाल्मीकिकुम्भोद्भवगर्गगोतमाः, कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा॥ ३॥

नलो दधीचिः सगरः पुरूरवाः, शाकुन्तलेयो भरतो धनंजयः।
रामत्रयं वेणुबलीयुधिष्ठराः, कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा॥ ४॥

रम्भा शची सत्यवती च देवकी, गौरी च लक्ष्मीरदितिश्र्च रुक्मिणी।
कूर्मो गजेन्द्रः सचराचरा धरा, कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा॥ ५॥

गंगा च शिप्रा यमुना सरस्वती, गोदावरी वेत्रवती च नर्मदा।
सा चन्द्रभागा वरुणा त्वसीनदी, कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा॥ ६॥

तुंग-प्रभासः कुरुक्षेत्र-पुष्करं, गया विमुक्तो बदरी वटेश्वरः।
केदारपम्पासरसी च नैमिषं, कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा॥ ७॥

शंखश्च दूर्वासितपत्रचारं, मणिःप्रदीपो वररत्नकाञ्चनम्।
सम्पूर्णम्भः सुहतो हुताशनः, कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा॥ ८॥

प्रयाणकाले यदि वा सुमंगले, प्रभातकाले च यदाऽभिषेचने।
धर्माय कामाय जयाय भाषितं, कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा॥ ९॥

विभिन्न संस्कार से संबंधित पूजन सामाग्री का विवरण

१. पुंसवन संस्कार-

१. औषधि अवघ्राण के लिए वट वृक्ष की मुलायम जटाएँ, गिलोय एवं पीपल के कोमल पत्ते लेकर तीनों को सिल पर पीस कर तरल मिश्रण बनाकर रखें।

२. चावल की खीर गाय के दूध में बनी हुई।

२. नामकरण संस्कार-

१. अभिषेक के लिए पल्लाव (आम्रपत्र) युक्त जल कलश

२. शिशु की कमर में बाँधने के लिए मेखला

३. मधु प्राशन के लिए शहद

४. शहद चटाने के लिए चाँदी की चम्मच या अँगूठी आदि

५. नाम घोषणा के लिए थाली या तख्ती (प्लेट)

६. विशेष आहुति के लिए मेवा/ मिष्ठान/ खीर से आहुति दें।

३. अन्नप्राशन संस्कार-१

१. अन्नप्राशन के लिए चाँदी का पात्र

२. चावल या सूजी की खीर, शहद, घी, तुलसीदल तथा गंगाजल तैयार करके रखें।

४. मुण्डन संस्कार-

१. मस्तक लेपन के लिए गाय का दूध एवं दही।

२. त्रिशिखा बंधन के लिए कलावे के तीन टुकड़े।

३. कैंची एवं छुरा पूजन हेतु पहले से रखे जाएँ।

४. मुण्डन के बाद शिशु को पहनाने के लिए नये वस्त्र।

५. बाल एकत्रित करने के लिए गुँधा आटा।

५. विद्यारम्भ संस्कार

१. पूजन के लिए गणेश जी एवं सरस्वती की प्रतिमा।

२. पट्टी, दवात, लेखनी/स्लेट, खड़िया/चौक आदि।

३. गुरु पूजन के प्रतीक रूप में नारियल रखें।

६. यज्ञोपवीत एवं दीक्षा संस्कार-

१. कमर में बाँधने के लिए मेखला (कलावा)।

२. कोपीन/ लंगोटी/ दण्ड धारण करने के लिए लाठी या ब्रह्मदण्ड।

३. यज्ञोपवीत पीले रंगे हुए ४. पहनने के लिए नये वस्त्र।

५. गुरु पूजन के लिए मशाल या नारियल रखें।

६. वेद पूजन के लिए वेद या कोई युग साहित्य रखें।

७. गायत्री, सावित्री एवं सरस्वती के लिए पूजा की चौकी पर तीन ढेरी अक्षत (चावल) की रखें।

७. विवाह संस्कार-

१. वर सत्कार के लिए जल, कुश, मधुपर्क २. यज्ञोपवीत पीला रँगा हुआ ३. विवाह घोषणा के लिए वर व वधू पक्ष की जानकारी नाम व गोत्र एवं स्थान के साथ। ४. वस्त्रोपहार तथा पुष्पोपहार के लिए वस्त्र एवं मालाएँ

५. कन्यादान हेतु हल्दी, गुप्तदान के लिए आटा गुँथा हुआ।

६. ग्रंथिबंधन के लिए हल्दी की गाँठ, पुष्प, दूर्वा और द्रव्य।

७. पत्थर की शिला, लाजा होम के लिए खील (लाई)/धान।

८. पाद प्रक्षालन के लिए परात या थाली,

९. आशीर्वाद के लिए पुष्प एवं मालाएँ/ सिंदूर।

विचार क्रांति अभियान शांतिकुञ्ज हरिद्वार (उत्तराखण्ड) पिन २४९४११

गायत्री यज्ञ से सम्बन्धित पूजन सामग्री

पूजन सामग्री का विवरण-

१. गायत्री माता का चित्र या अन्य देव प्रतिमाएँ जो भी उपलब्ध हों।

२. प्रतिमाएँ रखने के लिए चौकी।

३. चौकी पर बिछाने हेतु नया साफ आसन।

४. मिट्टी या धातु का कलश जिसमें स्वच्छ जल भरा हो।

५. कलश के ऊपर रखने के लिए नारियल एवं आम या अशोक के पत्ते।

६. चौकी पर रखने के लिए एक दीपक जो पूजन होने तक जले।

७. अगरबत्ती या धूप बत्तियाँ स्टैण्ड सहित।

८. माचिस, ९. रुई या उससे बनी हुई बत्तियाँ

१०. हवन कुण्ड

११. यज्ञ के लिए समिधाएँ/ लकड़ियाँ आवश्यकतानुसार

१२. कपूर

१३. पुष्प एवं मालाएँ आवश्यकतानुसार

१४. अक्षत (चावल) आवश्यकतानुसार

१५. रोली या चंदन आवश्यकतानुसार

१६. कलावा/ मौली आवश्यकतानुसार

१७. पूजा की सुपारी आवश्यकतानुसार

१८. पान के पत्ते आवश्यकतानुसार

१९. यज्ञोपवीत आवश्यकतानुसार

२०. चावल की खीर आवश्यकतानुसार

२१. नारियल का गोला (अंदर का खाने वाला भाग) आवश्यकतानुसार

२२. यज्ञ के प्रसाद हेतु मिष्ठान/फल/बताशा आदि आवश्यकतानुसार

२३. यज्ञ के लिए शुद्ध गाय का घी आवश्यकतानुसार

२४. यज्ञ के लिए हवन सामग्री आवश्यकतानुसार

२५. चौक/ रंगोली बनाने हेतु आटा, हल्दी या रंग आवश्यकतानुसार

२६. पूजन सामाग्री रखने के लिए थालियाँ आवश्यकतानुसार

२७. यज्ञ की अन्य सामग्री रखने हेतु प्लेटें आवश्यकतानुसार

२८. घी निकालने हेतु चम्मच आवश्यकतानुसार

२९. नारियल का गोला काटने हेतु साफ चाकू

३०. अग्नि को प्रज्ज्वलित करने हेतु पंखा

३१. पूजन करने व कराने वालों के लिए यथा सम्भव स्वच्छ आसन

हमारा युग निर्माण सत्संकल्प

✸ हम ईश्वर को सर्वव्यापी, न्यायकारी मानकर उसके अनुशासन को अपने जीवन में उतारेंगे।

✸ शरीर को भगवान् का मंदिर समझकर आत्म-संयम और नियमितता द्वारा आरोग्य की रक्षा करेंगे।

✸ मन को कुविचारों और दुर्भावनाओं से बचाए रखने के लिए स्वाध्याय एवं सत्संग की व्यवस्था रखे रहेंगे।

✸ इंद्रिय-संयम, अर्थ-संयम, समय-संयम और विचार-संयम का सतत अभ्यास करेंगे।

✸ अपने आपको समाज का एक अभिन्न अंग मानेंगे और सबके हित में अपना हित समझेंगे।

✸ मर्यादाओं को पालेंगे, वर्जनाओं से बचेंगे, नागरिक कर्तव्यों का पालन करेंगे और समाजनिष्ठ बने रहेंगे।

✸ समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी को जीवन का एक अविच्छिन्न अंग मानेंगे।

✸ चारों ओर मधुरता, स्वच्छता, सादगी एवं सज्जनता का वातावरण उत्पन्न करेंगे।

✸ अनीति से प्राप्त सफलता की अपेक्षा नीति पर चलते हुए असफलता को शिरोधार्य करेंगे।

✸ मनुष्य के मूल्यांकन की कसौटी उसकी सफलताओं, योग्यताओं एवं विभूतियों को नहीं, उसके सद्विचारों और सत्कर्मों को मानेंगे।

✸ दूसरों के साथ वह व्यवहार न करेंगे, जो हमें अपने लिए पसन्द नहीं।

✸ नर-नारी परस्पर पवित्र दृष्टि रखेंगे।

✸ संसार में सत्प्रवृत्तियों के पुण्य प्रसार के लिए अपने समय, प्रभाव, ज्ञान, पुरुषार्थ एवं धन का एक अंश नियमित रूप से लगाते रहेंगे।

✸ परम्पराओं की तुलना में विवेक को महत्त्व देंगे।

✸ सज्जनों को संगठित करने, अनीति से लोहा लेने और नवसृजन की गतिविधियों में पूरी रुचि लेंगे।

✸ राष्ट्रीय एकता एवं समता के प्रति निष्ठावान् रहेंगे। जाति, लिंग, भाषा, प्रान्त, सम्प्रदाय आदि के कारण परस्पर कोई भेदभाव न बरतेंगे।

✸ मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है, इस विश्वास के आधार पर हमारी मान्यता है कि हम उत्कृष्ट बनेंगे और दूसरों को श्रेष्ठ बनायेंगे, तो युग अवश्य बदलेगा।

✸ हम बदलेंगे-युग बदलेगा, हम सुधरेंगे-युग सुधरेगा इस तथ्य पर हमारा परिपूर्ण विश्वास है।

शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड) 249411 फोनः- 01334- 260602, फैक्सः-260866
Email: shantikunj@awgp.org Website: www.awgp.org